

दूरव्यापी वि. (तत्.) 1. दूरी तक व्याप्त या फैला हुआ 2. दूर तक पहुँचने वाला।

दूरसंचार पुं. (तत्.) संचार का वह विज्ञान या प्रौद्योगिकी जिसके अंतर्गत बिंबों, संकेतों, ध्वनियों आदि का अभिग्रहण और पुनःप्रेषण या प्रसारण इलेक्ट्रॉनिकी के माध्यम से त्वरित गति से किया जाता है, दूरदर्शन, दूरभाष, दूरमुद्रक, दूरलेख, रेडियो तथा अत्याधुनिक अंतर्जाल (इंटरनेट), ब्लॉग इत्यादि इसी के उदाहरण हैं।

दूरस्थ पुं. (तत्.) दे. दूरवर्ती।

दूरस्थ शिक्षा स्त्री. (तत्.) अध्यापन की वह पद्धति जिसके अंतर्गत दूरस्थ शिक्षा केंद्र से मुद्रित एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था होती है और जिसमें अन्यत्र कार्य करते हुए भी अपनी समय-सुविधा के अनुसार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकें पढ़ाई। पत्राचार शिक्षा।

दूरस्थित पुं. (तत्.) दे. दूरवर्ती।

दूरागत वि. (तत्.) दूर से आया हुआ।

दूरान्वय पुं. (तत्.) कर्ता-क्रिया या विशेषण-विशेष्य की अन्विति करते समय दोनों पदों का इतनी दूरी पर होना कि अर्थ समझने में कठिनाई हो। यह रचना का दोष माना जाता है।

दूरारंभ पैरा पुं. (तत्.+अं.) पुस्तक लिखते या टंकण करते समय वह अनुच्छेद जिसमें सामान्य से अधिक हाशिया छोड़ा गया हो।

दूरास्पर्श वि. (तत्.) 1. दूरी पर या ऊँचाई पर पहुँचा हुआ 2. (पहुँचना कठिन होने के कारण) कठिन, कष्टदायक।

दूरास्पर्श कल्पना स्त्री. (तत्.) परस्पर असंबद्ध परिघटनाओं को तारतम्य में बाँधने का प्रयास करते हुए की गई कल्पना।

दूरी स्त्री. (तत्.) दूर होने का भाव, दो व्यक्तियों/स्थानों, कालों/विचारों आदि के बीच होने वाला अंतर या फासला।

दूरीकरण पुं. (तत्.) दूर करना, अंतर बढ़ाना।

दूर्वा पुं. (तत्.) दे. दूब।

दूलह पुं. (तत्.) दे. दुलहा।

दूल्हा पुं. (तत्.) दे. दुलहा।

दूषक वि. (तत्.) 1. दोष उत्पन्न करने वाला 2. दोष दिखलाने वाला, आक्षेप करने वाला 3. दुष्ट स्वभाव वाला, दोष न होते हुए भी दोषी बतलाने वाला 4. अपराध करने वाला, अपराध की शिक्षा देने वाला।

दूषण पुं. (तत्.) 1. दोषयुक्त कर देना 2. किसी के दोष दिखाना 3. किसी पर दोष मढ़ना, आक्षेप करना 4. अपराध करना या करवाना, नीति या विधि (कानून) के विपरीत आचरण 5. दोष।

दूषित वि. (तत्.) 1. दोषयुक्त 2. दोष उत्पन्न करने वाला (पदार्थ) 3. कलंकित।

दूषित आशय पुं. (तत्.) विधि. किसी आपराधिक कृत्य को करने या करवाने के लिए सोच समझकर योजना बनाने का उद्देश्य।

दूसरा वि. (तत्.) 1. क्रम में एक के बाद आने वाला 2. उपस्थित समूह से भिन्न, अलग, अन्य जैसे- तुम अपने दूसरे चित्र भी तो दिखलाओ, सर्व. अन्य बाहरी व्यक्ति जैसे- इस मामले में दूसरों को नहीं पड़ना चाहिए सं. (तत्.) क्रिकेट. गेंदबाज द्वारा गेंद करने की वह पद्धति या की गई वह गेंद जो दिशा बदलने का आभास देकर सीधी निकल जाए। भारतीय खिलाड़ी हरभजन सिंह इसके विशेषज्ञ माने जाते हैं।

दृक् पुं. (तत्.) आँख, दृष्टि।

दृक्पात पुं. (तत्.) किसी को देखना, निगाह डालना, दृष्टिपात।

दृग पुं. (तत्.) दे. दृक्।

दृग्गोचर वि. (तत्.) दे. दृष्टिगोचर।

दृढ़ वि. (तत्.) 1. मजबूत, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली जैसे- दृढ़ दीवार, दृढ़ माँसपेशियाँ, दृढ़ शरीर 2.